

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 4356
दिनांक 29 मार्च, 2022

महाराष्ट्र में कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके)

4356. श्री विनायक भाऊराव राऊत:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) महाराष्ट्र के रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग जिले में कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) का ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या सरकार का और अधिक संख्या में केवीके स्थापित करने का विचार है;
- (ग) यदि हां, तो उक्त केंद्रों की स्थापना के लिए किन स्थानों की पहचान की गई है और महाराष्ट्र सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (घ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
- (ङ) सरकार द्वारा किसानों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए केवीके के बुनियादी ढांचे के उन्नयन हेतु उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है;
- (च) क्या सरकार ने केवीके के कामकाज की समीक्षा की है; और
- (छ) यदि हां, तो उक्त समीक्षा के परिणाम क्या हैं?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण मंत्री
(श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

(क) महाराष्ट्र के रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिलों में एक-एक कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) मौजूद हैं। रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग स्थित केवीके का ब्यौरा अनुबंध-I में दिया गया है।

(ख) से (घ): देश में 14 और केवीके स्थापित करने का प्रावधान है। केवीके का प्रावधान किए गए जिलों की राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-वार सूची अनुबंध-II में दी गई है।

(ङ) केवीके में बुनियादी अवसंरचनात्मक सुविधाओं, जैसे प्रशासनिक भवन, किसानों के लिए हॉस्टल, प्रदर्शन इकाइयों, उपकरण और कृषि मशीनरी की व्यवस्था की जाती है। पिछले पांच वर्षों के दौरान जरूरत के अनुसार इन केन्द्रों को अवसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे दलहन बीज केन्द्रों, मृदा परीक्षण किटों, सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों, एकीकृत कृषि प्रणाली इकाइयों, कृषि मशीनरी और उपकरण, जिला कृषि - मौसम इकाइयों से सुदृढ़ किया गया है।

(च) एवं (छ): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 2015 में कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके) का तृतीय पक्ष मूल्यांकन किया गया था। यह मूल्यांकन राष्ट्रीय श्रम आर्थिकी अनुसंधान और विकास संस्थान (एनआईएलईआरडी) के माध्यम से किया गया था जो नीति आयोग के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान है। इस मूल्यांकन की मुख्य टिप्पणियां और निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:-

- i) यह पाया गया कि खेत स्तर पर नई प्रौद्योगिकी के अंतरण में केवीके सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं और इससे लाभ भी हो रहा है।
- ii) बेहतर तकनीकी विशेषज्ञता और प्रदर्शन क्षमताओं के कारण केवीके अन्य सेवा प्रदाताओं के मुकाबले प्रौद्योगिकी अंतरण में बहुत आगे हैं।
- iii) लगभग 40% किसानों ने सूचित किया कि उन्होंने प्रौद्योगिकी को केवीके द्वारा प्रचार-प्रसार के तुरंत बाद क्रियान्वित किया तथा 25% किसानों ने ऐसा अगले कृषि मौसम से किया।
- iv) औसतन प्रतिवर्ष केवीके के अंतर्गत 43 गांव और 4300 किसान आते हैं। इनके अंतर्गत आने वाले 80% गांव केन्द्रों से 10 किलोमीटर की दूरी पर होते हैं।
- v) केवीके ने 96% किसानों के अनुरोधों पर विचार किया।
- vi) किसानों द्वारा अपनाई गई 42% प्रौद्योगिकियों से उच्च उत्पादकता प्राप्त हुई, 33% से उच्च पैदावार जनित आय और 20% प्रौद्योगिकियां अपनाने से कठिन मेहनत में कमी आई।
- vii) लगभग 25% प्रशिक्षित व्यक्तियों ने स्वरोजगार उद्यम आरंभ किए।
- viii) केवीके के हस्तक्षेप से लगभग 80% किसानों ने अपनी उन कृषि पद्धतियों में फेर-बदल किया है जो फसलों के विविधीकरण और फसल पैटर्न में बदलावों, बीजारोपण तकनीक, उर्वरकों और कीटनाशकों के इस्तेमाल, प्रयुक्त मशीनरी और जल उपयोग पैटर्न में बदलावों से संबंधित थी।

पुनः 2020 में, भाकृअप ने इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रीबिजनस प्रोफेशनल्स, नई दिल्ली के मार्फत केवीके के मूल्यांकन के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष नीचे दिए गए हैं:-

- i) औसत केवीके की पहुंच लगभग 90-100 गांव तक पाई गई। इसकी मजबूत आईसीटी युक्तियों के परिणामस्वरूप गांव तक इसकी पहुंच प्रति केवीके 200 गांव तक बढ़ जाती है।
- ii) वर्ष 2012-13 से 2019-20 तक केवीके के संपर्क कार्यक्रमों से खेतिहर परीक्षणों में 51%, अग्रपंक्ति प्रदर्शनों में 61%, प्रशिक्षित किसानों में 16% और प्रशिक्षित विस्तार कर्मियों में 35% की वृद्धि हुई।
- iii) खेतिहर महिलाओं का प्रशिक्षण 2012-13 के 30% से बढ़कर 2019-20 में 37% हो गया।
- iv) वर्ष 2012-13 से 2019-20 तक भेजे गए लघु संदेशों की संख्या में 142 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार से व्हाट्सऐप ग्रुप, फेसबुक ग्रुप जैसी डिजिटल प्रौद्योगिकियों के आगमन से वर्ष 2012-13 से 2019-20 तक कवर किए गए किसानों की संख्या में 135 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिससे यह संपर्क चार गुणा बढ़ गया है।
- v) उपरोक्त अवधि के दौरान केवीके द्वारा बीज उत्पादन में 32% वृद्धि और रोपण सामग्री उत्पादन में 117 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

महाराष्ट्र के रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) का ब्यौरा

| विवरण | रत्नागिरी | सिंधुदुर्ग |
|------------------|---|---|
| स्थापना वर्ष | 1983 | 1995 |
| भूमि (हे.) | 20.35 | 23.71 |
| स्थान | देवदहे, लांजा, रत्नागिरी | किरलोस, मलवान, सिंधुदुर्ग |
| मेज़बान संगठन | बाला साहब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, रत्नागिरि | सिंधुदुर्ग जिला कृषि प्रतिष्ठान, सिंधुदुर्ग |
| अवसंरचना | प्रशासनिक भवन, कर्मचारी आवास, वर्षाजल संचयन प्रणाली, थ्रेशिंग फ्लोर, कृषि गोदाम, आईसीटी प्रयोगशाला, बाड़ लगाने का कार्य | प्रशासनिक भवन, वर्षाजल संचयन प्रणाली, आईसीटी प्रयोगशाला, बाड़ लगाने का कार्य |
| प्रदर्शन इकाइयां | न्यूट्रिशनल गार्डन, मदर आर्चर्ड (आम, काजू), बागवानी युक्त पौधशाला, बकरी एकक, कुक्कुट एकक, अजोला एकक, वर्मीकम्पोस्टिंग एकक, क्राप केफिटेरिया | कुक्कुट, फल प्रसंस्करण, बकरी इकाई, आईएफएस, मदर आर्चर्ड (काजू, आंवला, आम, चीकू), मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, प्राकृतिक कृषि, बागवानीयुक्त पौधशाला, क्राप केफिटेरिया |

अनुबंध-II

[लोक सभा के दिनांक 29.03.2022 के अतारंकित प्रश्न सं0 4356 का भाग (ख) से (घ)]

कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) के लिए उन जिलों की राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-वार सूची जिनका 2021-26 की ईएफसी में प्रावधान किया गया है।

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | जिले का नाम |
|--------------------------------|---------------------------|
| दादर एवं नगर हवेली | सिल्वासा |
| दमन एवं दीव | दमन, दीव |
| हरियाणा | पलवल, मेवात, पंचकुला |
| जम्मू एवं कश्मीर | उधमपुर |
| पुडुचेरी | माहे |
| राजस्थान | श्रीगंगानगर |
| उत्तराखंड | पिथौरागढ़, चमोली |
| पश्चिम बंगाल | बांकुड़ा, वीरभूम, वर्धमान |
